Indian Journal of
Social Sciences Research and Analytics

IJSSRA l ISSN (online): 3107-6238
January-March 2026 l Vol. 1 l Issue 4

भारतीय ज्ञान परंपरा, चरित्र-निर्माण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020

प्रोफेसर गोपाल कृष्ण ठाकुर*

*अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

ईमेल: gkthakur11@gmail.com

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.21076764

सारांश:

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन या व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास तथा चरित्र-निर्माण रहा है। सत्य, आत्मसंयम, कर्तव्यबोध, करुणा, सहअस्तित्व और लोककल्याण जैसे मूल्य भारतीय शिक्षा-दर्शन के आधारभूत तत्व हैं, जिनका प्रतिपादन वेद, उपनिषद, भगवद्गीता तथा विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं में मिलता है। समकालीन शिक्षा में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, नैतिक अस्पष्टता तथा सामाजिक विखण्डन के परिप्रेक्ष्य में चरित्र-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पुनः अनुभव की जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षा को केवल ज्ञान एवं कौशल तक सीमित न रखते हुए नैतिक, संवेदनशील, उत्तरदायी तथा सृजनशील नागरिकों के निर्माण पर बल देती है। प्रस्तुत आलेख भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित चरित्र-निर्माण की अवधारणा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उसके शैक्षिक पुनर्पाठ का विश्लेषण करता है। अध्ययन गुणात्मक, दार्शनिक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है तथा दस्तावेजीय विश्लेषण की पद्धति अपनाई गई है। निष्कर्षतः यह प्रतिपादित किया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा चरित्र-निर्माण का दार्शनिक आधार प्रदान करती है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 उसके समकालीन शैक्षिक क्रियान्वयन का नीतिगत ढाँचा प्रस्तुत करती है। दोनों का समन्वय मूल्यपरक, उत्तरदायी तथा आत्मनिर्भर नागरिकों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रमुख शब्द: *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, चरित्र-निर्माण, मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, समग्र शिक्षा।*

प्रस्तावना:

इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा के उद्देश्य और स्वरूप को लेकर वैश्विक स्तर पर व्यापक विमर्श हो रहा है। ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था, तीव्र तकनीकी परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संस्कृति तथा वैश्वीकरण ने शिक्षा को अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं, किन्तु इसके साथ ही नैतिक निर्णय क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति, संवेदनशीलता और चरित्र-निर्माण जैसी मानवीय विशेषताओं के क्षीण होने की चिंता भी बढ़ी है। केवल सूचना, कौशल और व्यावसायिक

दक्षता पर आधारित शिक्षा एक सक्षम कार्यबल तो तैयार कर सकती है, परन्तु आवश्यक नहीं कि वह उत्तरदायी, विवेकशील और नैतिक नागरिक भी तैयार करे। यही कारण है कि विश्वभर में चरित्र०निर्माण के लिए शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा तथा समग्र शिक्षा जैसे विमर्श पुनः केन्द्र में आए हैं। भारतीय शिक्षा-दर्शन में यह प्रश्न नया नहीं है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने शिक्षा को प्रारम्भ से ही मनुष्य के समग्र विकास की प्रक्रिया माना है। उपनिषदों का उद्घोष "सा विद्या या विमुक्तये" इस तथ्य का पर बल देता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना-संग्रह नहीं, बल्कि अज्ञान, संकीर्णता और अविवेक से मुक्ति प्राप्त करना है। इसी प्रकार भगवद्गीता, योगदर्शन, बौद्ध तथा जैन परम्पराएँ आत्मसंयम, विवेक, करुणा, कर्तव्य और लोककल्याण को शिक्षित जीवन के अनिवार्य आयाम मानती हैं (भगवद्गीता, 2019; पतञ्जलि, 2015)।

समकालीन शैक्षिक विमर्श में भी यह स्वीकार किया जा रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अधिगम उपलब्धियों अथवा मानकीकृत परीक्षणों में उत्कृष्ट प्रदर्शन तक सीमित नहीं हो सकता। लिकोना (1991) ने चरित्र-शिक्षा को उत्तरदायी एवं नैतिक नागरिकों के निर्माण का आधार माना, जबकि बिएस्ता (2010) ने शिक्षा के अत्यधिक मापन-केन्द्रित दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए उसके नैतिक, लोकतान्त्रिक एवं मानवीय उद्देश्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया। बाद में बिएस्ता (2021) ने शिक्षा को 'विश्व-केंद्रित' (World-centred) दृष्टिकोण से देखते हुए ऐसे शिक्षार्थियों के निर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की, जो स्वयं के साथ-साथ समाज और व्यापक विश्व के प्रति भी उत्तरदायी हों। इसी प्रकार यूनेस्को (2021) ने शिक्षा के लिए एक नए सामाजिक अनुबंध की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए सहयोग, न्याय, सहअस्तित्व और साझा मानवीय उत्तरदायित्व को भविष्य की शिक्षा का आधार माना। इन समकालीन अंतरराष्ट्रीय विमर्शों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा का मूल्यांकन केवल आर्थिक उत्पादकता या कौशल-विकास के आधार पर नहीं किया जा सकता; उसे नैतिकता, मानवीय गरिमा, सामाजिक उत्तरदायित्व और चरित्र-निर्माण जैसे व्यापक उद्देश्यों से भी जोड़ना आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्पाठ न केवल सांस्कृतिक आवश्यकता है, बल्कि समकालीन वैश्विक शिक्षा-विमर्श के साथ एक सार्थक वैचारिक संवाद भी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस भारतीय दृष्टि को समकालीन शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास करती है। यह नीति शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख प्रक्रिया न मानकर ऐसे नागरिकों के निर्माण का माध्यम स्वीकार करती है जो नैतिक, संवेदनशील, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्पन्न, संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करने में सक्षम हों (भारत सरकार, 2020)। इसी उद्देश्य से नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा, अनुभवात्मक अधिगम, मूल्यपरक शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन तथा समग्र विकास पर विशेष बल दिया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रतिपादित चरित्र-निर्माण की अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के

शैक्षिक उद्देश्यों को किस प्रकार दार्शनिक आधार प्रदान करती है। प्रस्तुत आलेख इसी प्रश्न का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 परस्पर पूरक हैं। जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा चरित्र-निर्माण के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन करती है, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 उन्हें समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में संस्थागत रूप से क्रियान्वित करने का प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में चरित्र-निर्माण की अवधारणा:

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास या ज्ञान-संचय नहीं, बल्कि मनुष्य के व्यक्तित्व का समग्र परिष्कार माना गया है। यहाँ शिक्षा को ऐसी प्रक्रिया के रूप में समझा गया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति में विवेक, आत्मसंयम, नैतिकता, उत्तरदायित्व तथा लोकमंगल की भावना का विकास होता है। इस दृष्टि से चरित्र-निर्माण भारतीय शिक्षा-दर्शन का गौण नहीं, बल्कि उसका मूल उद्देश्य है। भारतीय परम्परा में ज्ञान तभी सार्थक माना गया है जब वह व्यक्ति के आचरण, निर्णय और सामाजिक व्यवहार में रूपान्तरित हो। उपनिषदों में शिक्षा का लक्ष्य आत्मबोध तथा जीवन के उच्चतर मूल्यों की प्राप्ति माना गया है। "सा विद्या या विमुक्तये" का सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि वास्तविक शिक्षा मनुष्य को अज्ञान, अहंकार और संकीर्ण दृष्टि से मुक्त कर विवेकपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर करती है। इसी प्रकार तैत्तिरीयोपनिषद् के दीक्षान्त उपदेश - *"सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः"* - केवल धार्मिक निर्देश नहीं, बल्कि नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित शिक्षा-दर्शन के आधारभूत सूत्र हैं (तैत्तिरीयोपनिषद्, 2018)। स्पष्टतः भारतीय परम्परा में ज्ञान और चरित्र को कभी पृथक नहीं माना गया। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का एक अन्य महत्त्वपूर्ण आधार **गुरु-शिष्य परम्परा** है। इस व्यवस्था में शिक्षा केवल विषयगत ज्ञान के हस्तान्तरण तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन-मूल्यों के आत्मसात् करने की प्रक्रिया थी। गुरु स्वयं आदर्श आचरण का प्रतिमान होता था और शिष्य अनुकरण, संवाद, अनुशासन तथा आत्मचिन्तन के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास करता था। इस प्रकार शिक्षा का केन्द्र पाठ्यवस्तु नहीं, बल्कि जीवन था। इसी कारण प्राचीन भारतीय शिक्षा में सत्यनिष्ठा, सेवा, संयम, श्रम, विनय तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों को विशेष महत्त्व प्राप्त था (अल्तेकर, 2009)।

भारतीय ज्ञान परंपरा में **भगवद्गीता** चरित्र-निर्माण का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दार्शनिक आधार प्रस्तुत करती है। गीता का *स्थितप्रज्ञ* केवल आध्यात्मिक आदर्श नहीं, बल्कि ऐसा व्यक्तित्व है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विवेक, धैर्य और नैतिक संतुलन बनाए रखता है। निष्काम कर्म, स्वधर्म, आत्मसंयम तथा समत्व की अवधारणाएँ व्यक्ति को उत्तरदायी, आत्मनियंत्रित और कर्तव्यपरायण जीवन की प्रेरणा देती हैं (भगवद्गीता, 2019)। आज जब शिक्षा में भावनात्मक संतुलन, नैतिक निर्णय क्षमता और उत्तरदायी नेतृत्व पर बल दिया जा रहा है, तब गीता का यह दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रासंगिक

प्रतीत होता है। इसी प्रकार **स्वामी विवेकानन्द** ने शिक्षा को "मनुष्य-निर्माण" (Man-making Education) की प्रक्रिया माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बाह्य सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना है (विवेकानन्द, 2013)। उनके शिक्षा-दर्शन में आत्मविश्वास, निर्भीकता, चरित्रबल, सेवा और राष्ट्रनिष्ठा प्रमुख तत्व हैं। दूसरी ओर **महात्मा गांधी** ने शिक्षा को सत्य, अहिंसा, श्रम, स्वावलम्बन और नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ा। उनकी बुनियादी शिक्षा की अवधारणा इस विश्वास पर आधारित थी कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा का संतुलित विकास करे (गांधी, 2009)। इन दोनों विचारकों के चिंतन में चरित्र-निर्माण शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य है, न कि उसका सहायक परिणाम। भारतीय वेदान्त परम्परा में **साधन-चतुष्टय** - विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व - चरित्र-निर्माण का एक गहन मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक प्रतिमान प्रस्तुत करता है। यदि समकालीन शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इसकी पुनर्व्याख्या की जाए, तो *विवेक* आलोचनात्मक एवं नैतिक निर्णय क्षमता, *वैराग्य* आत्मनियन्त्रण और संतुलित उपभोग, *षट्सम्पत्ति* भावनात्मक अनुशासन तथा सामाजिक परिपक्वता, और *मुमुक्षुत्व* उत्कृष्टता एवं आत्मविकास की सतत आकांक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा चरित्र को किसी एक नैतिक गुण तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की समन्वित प्रक्रिया के रूप में देखती है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में चरित्र-निर्माण शिक्षा का स्वाभाविक परिणाम नहीं, बल्कि उसका मूल उद्देश्य है। यही वह दार्शनिक आधार है, जिसके आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा प्रतिपादित समग्र विकास, नैतिक शिक्षा, उत्तरदायी नागरिकता और भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणाओं को अधिक गहराई से समझा जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 और चरित्र-निर्माण का विमर्श:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में केवल संरचनात्मक सुधार का दस्तावेज नहीं है, बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों के पुनर्परिभाषीकरण का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास भी है। नीति शिक्षा को मात्र ज्ञान, सूचना अथवा रोजगार-कौशल अर्जित करने की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखती, बल्कि ऐसे उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण का माध्यम मानती है जो नैतिक, संवेदनशील, सृजनशील, तार्किक तथा संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हों (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का मूल प्रतिपाद्य भारतीय शिक्षा-दर्शन की उस परम्परा के निकट दिखाई देता है, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास तथा चरित्र-निर्माण माना गया है। नीति में समग्र विकास को शिक्षा का आधारभूत लक्ष्य स्वीकार किया गया है। इसके अंतर्गत संज्ञानात्मक, भावात्मक, नैतिक, सामाजिक तथा सृजनात्मक विकास को समान महत्त्व दिया गया है। यह दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परंपरा के उस समन्वित मानव-दर्शन से साम्य रखता है, जिसमें

मनुष्य को केवल बौद्धिक सत्ता नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के एकीकृत स्वरूप के रूप में देखा गया है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 आधुनिक शैक्षिक शब्दावली में उसी समग्रता का पुनर्पाठ प्रस्तुत करती है, जिसका प्रतिपादन भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में सहस्राब्दियों से किया जाता रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष **भारतीय ज्ञान परंपरा** को शिक्षा के मुख्य प्रवाह में पुनः प्रतिष्ठित करना है। नीति यह स्वीकार करती है कि भारत की बौद्धिक परम्पराओं, भाषाओं, दर्शन, गणित, विज्ञान, कला, योग तथा सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मविश्वास, बौद्धिक स्वायत्तता और उत्तरदायी नागरिकता के विकास में सहायक हो सकता है। यहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा को अतीत के गौरवगान के रूप में नहीं, बल्कि समकालीन शिक्षा के एक सृजनात्मक स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य परम्परा और आधुनिकता के मध्य कृत्रिम द्वन्द्व उत्पन्न करना नहीं, बल्कि दोनों के मध्य रचनात्मक संवाद स्थापित करना है। नीति में **नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों** पर विशेष बल दिया गया है। सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, करुणा, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक सहभागिता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा वैश्विक नागरिकता जैसे मूल्यों को शिक्षा के अपेक्षित परिणामों के रूप में रेखांकित किया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। उल्लेखनीय है कि ये मूल्य भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रतिपादित सत्य, अहिंसा, दया, लोकसंग्रह, सहअस्तित्व तथा *वसुधैव कुटुम्बकम्* जैसी अवधारणाओं से विरोध नहीं, बल्कि गहरे वैचारिक सामंजस्य का परिचय देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 चरित्र-निर्माण को केवल व्यक्तिगत नैतिकता तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे सामाजिक उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक नागरिकता से भी जोड़ती है।

इसी प्रकार नीति में **अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिन्तन, समस्या-समाधान क्षमता तथा बहुविषयक शिक्षा** को विशेष महत्त्व दिया गया है। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों को निष्क्रिय सूचना-ग्राही के स्थान पर सक्रिय, विवेकशील और उत्तरदायी शिक्षार्थी के रूप में विकसित करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भी ज्ञान को केवल स्मृति या सूचना का विषय न मानकर *अनुभव*, *मनन* और *निदिध्यासन* के माध्यम से आत्मसात् करने पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की अधिगम-दृष्टि भारतीय शिक्षा-दर्शन की व्याख्यात्मक और अनुभवपरक परम्परा के साथ गहरा सामंजस्य स्थापित करती है।

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 चरित्र-निर्माण के लिए व्यापक वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है, तथापि इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन उद्देश्यों का रूपान्तरण वास्तविक शैक्षिक व्यवहार में किस सीमा तक हो पाता है। यदि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में मूल्य-शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रह जाए, शिक्षक-शिक्षा में नैतिक नेतृत्व और भारतीय ज्ञान परंपरा को पर्याप्त स्थान न मिले, अथवा मूल्यांकन प्रणाली केवल परीक्षा-केंद्रित बनी रहे, तो नीति

के घोषित उद्देश्य पूर्णतः साकार नहीं हो सकेंगे। इसलिए चरित्र-निर्माण को पाठ्यक्रम का एक पृथक अध्याय मानने के स्थान पर सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की आधारभूत दार्शनिक दृष्टि के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का समन्वित परिप्रेक्ष्य

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के मध्य संबंध को केवल ऐतिहासिक निरन्तरता के रूप में नहीं, बल्कि एक साझा शैक्षिक दर्शन के रूप में समझा जाना चाहिए। यद्यपि दोनों की ऐतिहासिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमियाँ भिन्न हैं, तथापि दोनों का लक्ष्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ नैतिक, उत्तरदायी, विवेकशील और सामाजिक रूप से संवेदनशील हो। भारतीय ज्ञान परंपरा जहाँ चरित्र-निर्माण के दार्शनिक एवं नैतिक आधारों का प्रतिपादन करती है, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 उन्हें समकालीन शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या और अधिगम प्रक्रियाओं में रूपान्तरित करने का प्रयास करती है। इस दृष्टि से नीति को भारतीय शिक्षा-दर्शन की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि उसका समकालीन पुनर्पाठ कहा जा सकता है।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में **विवेक** को मनुष्य की सर्वोच्च बौद्धिक एवं नैतिक क्षमता माना गया है। विवेक व्यक्ति को सत्य और असत्य, उचित और अनुचित तथा स्थायी और अस्थायी के मध्य भेद करने की क्षमता प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इसी क्षमता को आधुनिक शैक्षिक भाषा में **आलोचनात्मक चिन्तन** तार्किक निर्णय-क्षमता तथा समस्या-समाधान कौशल के रूप में विकसित करना चाहती है। इस प्रकार नीति में प्रतिपादित आलोचनात्मक चिन्तन भारतीय परम्परा से पृथक अवधारणा न होकर उसकी समकालीन अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। इसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा आत्मसंयम, इन्द्रियनिग्रह तथा अनुशासित जीवन को चरित्र-निर्माण का आधार मानती है। भगवद्गीता, योगदर्शन तथा वेदान्त में आत्मनियन्त्रण को व्यक्ति की आन्तरिक परिपक्वता का लक्षण माना गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 विद्यार्थियों में आत्म-प्रेरणा, उत्तरदायित्व, सहयोग, भावनात्मक संतुलन तथा नैतिक निर्णय-क्षमता के विकास पर बल देती है। यद्यपि नीति इन मूल्यों को आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक शब्दावली में व्यक्त करती है, तथापि उनका दार्शनिक आधार भारतीय ज्ञान परंपरा में स्पष्टतः विद्यमान है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उत्कर्ष नहीं, बल्कि **लोकसंग्रह** और **लोककल्याण** भी है। व्यक्ति का विकास समाज से पृथक नहीं माना गया है। यही दृष्टि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय चेतना, लोकतांत्रिक सहभागिता तथा वैश्विक नागरिकता के रूप में पुनः प्रतिध्वनित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि नीति चरित्र-निर्माण को केवल व्यक्तिगत नैतिकता तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे सामाजिक प्रतिबद्धता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। यह दृष्टिकोण

भारतीय परम्परा के *वसुधैव कुटुम्बकम्* और *सर्वे भवन्तु सुखिनः* जैसे व्यापक मानवीय आदर्शों के साथ भी सामंजस्य स्थापित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का समग्र विकास पर बल देना भी भारतीय शिक्षा-दर्शन के साथ गहरे वैचारिक सामंजस्य का परिचायक है। भारतीय परम्परा में मनुष्य को शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित स्वरूप के रूप में देखा गया है; अतः शिक्षा का उद्देश्य भी इन सभी आयामों का संतुलित विकास रहा है। नीति में संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक तथा सृजनात्मक विकास को समान महत्त्व प्रदान किया गया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलभूत शैक्षिक आदर्शों को समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्परिभाषित करती है। यह परम्परा का यथावत् पुनरुत्थान नहीं, बल्कि उसके जीवन्त मूल्यों का आधुनिक शिक्षा-दर्शन के साथ रचनात्मक समन्वय है।

समकालीन शिक्षा के लिए निहितार्थ:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वित अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चरित्र-निर्माण को शिक्षा का सहायक उद्देश्य न मानकर उसके मूल प्रतिमान के रूप में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अधिगम का मूल्यांकन प्रायः परीक्षा-परिणामों, व्यावसायिक दक्षताओं तथा रोजगारोन्मुख उपलब्धियों के आधार पर किया जाता है। यद्यपि ये आयाम महत्त्वपूर्ण हैं, तथापि इनके साथ नैतिक विवेक, आत्मानुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति और लोककल्याण की भावना का समुचित विकास भी उतना ही आवश्यक है। यदि शिक्षा इन आयामों की उपेक्षा करती है, तो वह दक्ष मानव संसाधन तो तैयार कर सकती है, किन्तु उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण नहीं कर सकती।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस चुनौती का समाधान शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण में खोजती है। नीति में प्रतिपादित बहुविषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, भारतीय ज्ञान परंपरा, संवैधानिक मूल्य, नैतिक तर्कशीलता तथा जीवन-कौशल का उद्देश्य विद्यार्थियों में केवल बौद्धिक क्षमता का विकास करना नहीं, बल्कि उत्तरदायी व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि चरित्र-निर्माण को किसी पृथक् पाठ्यविषय तक सीमित न रखा जाए, बल्कि शिक्षण-अधिगम की सम्पूर्ण प्रक्रिया, विद्यालयी संस्कृति तथा शिक्षक के आचरण में उसका समावेश किया जाए।

इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय शिक्षा-दर्शन में गुरु केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों का प्रेरक और आदर्श आचरण का संवाहक माना गया है। समकालीन शिक्षा में भी शिक्षक तभी चरित्र-निर्माण में प्रभावी भूमिका निभा सकता है, जब वह स्वयं नैतिक नेतृत्व, संवादशीलता, समावेशिता तथा बौद्धिक

IJSSRA l ISSN (online): 3107-6238
January-March 2026 l Vol. 1 l Issue 4

ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत करे। अतः शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय शिक्षा-दर्शन, मूल्यपरक शिक्षण, नैतिक नेतृत्व तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के समुचित समावेश की आवश्यकता है। साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन अतीत की यथावत् पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि उसके जीवन्त मूल्यों का समकालीन वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक और बहुलतावादी संदर्भों में पुनर्पाठ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इसी संतुलित दृष्टि का समर्थन करती है, जहाँ भारतीयता और आधुनिकता, परम्परा और नवाचार, तथा नैतिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक माने गए हैं। यही संतुलन चरित्र-आधारित शिक्षा की सफलता का आधार बन सकता है।

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य सदैव मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व के विकास तथा चरित्र-निर्माण से जुड़ा रहा है। ज्ञान को आचरण से, विवेक को उत्तरदायित्व से और आत्मविकास को लोककल्याण से जोड़ना भारतीय शिक्षा-दर्शन की विशिष्ट पहचान है। उपनिषदों, भगवद्गीता, योगदर्शन तथा आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों के विचारों में यह धारणा निरन्तर प्रतिपादित होती है कि शिक्षा का वास्तविक मूल्य व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक परिष्कार में निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस परम्परा को समकालीन शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्परिभाषित करती है। नीति का समग्र विकास, भारतीय ज्ञान परंपरा, अनुभवात्मक अधिगम, नैतिक एवं संवैधानिक मूल्य, बहुविषयक शिक्षा तथा उत्तरदायी नागरिकता पर बल इस तथ्य का द्योतक है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक उत्पादकता या व्यावसायिक दक्षता तक सीमित नहीं हो सकता। उसे ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना होगा जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ विवेकशील, संवेदनशील, नैतिक तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी भी हों।

इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के मध्य संबंध ऐतिहासिक समानता का नहीं, बल्कि वैचारिक निरन्तरता का है। भारतीय ज्ञान परंपरा चरित्र-निर्माण का दार्शनिक आधार प्रदान करती है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 उसके समकालीन शैक्षिक क्रियान्वयन का नीतिगत ढाँचा प्रस्तुत करती है। अतः यदि नीति में प्रतिपादित मूल्यों का प्रभावी समावेश पाठ्यचर्या, शिक्षक-शिक्षा, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं तथा मूल्यांकन प्रणाली में किया जाता है, तो भारतीय शिक्षा व्यवस्था ज्ञान और कौशल के साथ-साथ नैतिक नेतृत्व, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनशीलता से सम्पन्न नागरिकों के निर्माण की दिशा में सार्थक योगदान दे सकेगी।

संदर्भ

1. अरविन्द, श्री. (2012). *भारतीय संस्कृति के आधार*. पुदुच्चेरी: श्री अरविन्द आश्रम.
2. अल्तेकर, ए. एस. (2009). *प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

3. गांधी, मोहनदास करमचन्द. (2009). *हिन्द स्वराज*. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन.

4. तैत्तिरीयोपनिषद्. (2018). गोरखपुर: गीताप्रेस.

5. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ. (2011). *भारतीय दर्शन का इतिहास* (भाग 1). नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

6. पतञ्जलि. (2015). *योगसूत्र*. गोरखपुर: गीताप्रेस.

7. बिएस्ता, जी. जे. जे. (2010). *गुड एजुकेशन इन ऐन एज ऑफ मेज़रमेंट: एथिक्स, पॉलिटिक्स, डेमोक्रेसी*. बोल्डर, कोलोराडो: पैराडाइम पब्लिशर्स.

8. बिएस्ता, जी. जे. जे. (2021). *वर्ल्ड-सेंटर्ड एजुकेशन: ए व्यू फ़ॉर द प्रेज़ेंट*. लंदन: रूटलेज.

9. भगवद्गीता. (2019). गोरखपुर: गीताप्रेस.

10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.

11. मुण्डकोपनिषद्. (2018). गोरखपुर: गीताप्रेस.

12. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2014). *भारतीय दर्शन* (भाग 1–2). नई दिल्ली: राजपाल एंड संस.

13. लिकोना, थॉमस. (1991). *एजुकेटिंग फ़ॉर कैरेक्टर: हाउ आवर स्कूल्स कैन टीच रिस्पेक्ट एंड रिस्पॉन्सिबिलिटी*. न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स.

14. विवेकानन्द, स्वामी. (2013). *शिक्षा पर विचार*. कोलकाता: अद्वैत आश्रम.

15. शंकराचार्य. (2017). *विवेकचूडामणि*. वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन.

16. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को). (2021). *रीइमैजिनिंग आवर फ्यूचर्स टुगेदर: ए न्यू सोशल कॉन्ट्रैक्ट फ़ॉर एजुकेशन*. पेरिस: यूनेस्को.